DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
GOVT.V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE .DURG CHHATTISGARH
अध्ययन सामग्री निर्माण
डा शकील हुसैन
shakeelvns27@gmail.com
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय ।
दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।
नैक द्वारा **A+** मूल्यांकित

राज्य प्राकृतिक है
OR
मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है जो प्रकृति द्वारा राजकीय जीवन के लिए नियत किया गया है । **Man is political animal destined by nature for the state life**

अरस्तू की महान पुस्तक Politics राजनीतिक दर्शन की मूल्यवान धरोहर है, जिसमें उसके राज्य सम्बन्धी समस्त विचार प्राप्त होते हैं।
प्लेटो राज्य को एक प्रत्यय के रूप में लेता है और उसे व्यक्ति थी आत्मा का ही विस्तृत रूप-बताता है क्योकि दोनों के निर्माणकारी तत्व समान हैं। प्लेटो का शिष्य होने के नाते अरस्तू भी मानवीय आत्मा के गुण से अपना विवेचन प्रारम्भ आता है किन्तु एक जीवशास्त्री होने के नाते वह राज्य की जैविक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

परिवार -

- अरस्तू ने अपने ग्रन्थ पालिटिक्स में यह तर्क दिया कि नगर राज्य और राजनीतिक शासन "प्राकृतिक" हैं क्योकि यह परिवार जैसी प्रकृतिक संस्था से विकसित हुआ है । सर्वप्रथम, स्त्री पुरूष जोड़े में संयुक्त हुए क्योंकि वे अलग-अलग अस्तित्व में नहीं रह सकते थे अतः प्रजनन के लिए एक साथ आए ।
- फिर स्वाभाविक स्वामियों ने (बुद्धिमान लोगो ने) शासन करने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग किया फलतः स्वामी और दास आत्म-संरक्षण के लिए एक साथ आए। और दासो ने अपने शरीर को श्रम में नियोजित किया। इस प्रकार प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इन आदिम समुदायों से स्वाभाविक रूप से परिवार का उदय हुआ।

ग्राम

परिवार मे कई लोग होते है लेकिन यह ईकाई के रूप मे पुनः एक ही रह जाता है और कोई भी एक अकेला अपनी आवश्यकताएं पूर्ण नही कर सकता अतः जब कई घर आगे की जरूरतों के लिए मिल गए तो प्रकृति के अनुरूप भी एक गांव का उदय होता है ।

नगर राज्य

गांव भी ईकाई के रूप मे पुनः एक ही रह जाता है और कोई भी एक अकेला अपनी आवश्यकताएं पूर्ण नही कर सकता अतः जब कई ग्राम भावी आवश्यकताओ के लिए मिलते है तो प्रकृति के अनुरूप भी एक नगर राज्य का उदय होता है जो एक आत्मनिर्भर ईकाई है ।

अरस्तू यह स्थापित करता है कि राज्य का विकास मनुष्य की सामाजिकता की स्वाभाविक प्रकृति के कारण हुआ है। चूंकी मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृति ही राज्य के रूप में विकसित होती है अतः मनुष्य एक सामाजिक या राजनीतिक प्राणी है।
इसप्रकार यह तर्क एक जैविक ईकाई (स्त्री पुरूष) की राजनीतिक (सामाजिक)आवश्यकताओ के कारण सरल समुदायों (परिवार) के विकास से जटिल समुदायो (नगर-राज्य) के प्राकृतिक विकास की व्याख्या करता है ।

गृह कार्य

- राज्य प्राकृतिक है । इस कथन की 350 शब्दो मे व्ताख्या कीजिए ।
- मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है । इस कथन की 350 शब्दो मे व्ताख्या कीजिए ।

संदर्भ

https://www.britannica.com/biography/Aristotle

सैबाइन जी एच **(1986) :** राजनीतिक चिन्तन का इतिहास , एस चन्द एण्ड कम्पनी नई दिल्ली ।